DSSSB PRT, TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
आधुनिक काल
Part -7
LIVE
02-07-2024 09:00 AM

धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

ठण्डा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी, आधन्त, अन्धा युग, देशान्तर। 'कनुप्रिया' में राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन है। 'देशान्तर' काव्य-संग्रह में विदेशी कविताओं का संग्रह है।

प्रभाकर माचवे

प्रमुख काव्य कृतियाँ : जहाँ शब्द हैं, तेल की पकौड़ियाँ, स्वप्नभंग, अनुक्षण मैपल, विश्वकर्मा।

गिरिजा कुमार माथुर

गिरिजाकुमार माथुर की काव्यात्मक शुरुआत ब्रजभाषा के परम्परागत कवित्त-सवैया लेखन से हुई। वे विद्रोही काव्य परम्परा के रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि की रचनाओं से अत्यधिक प्रभावित हुए। इनकी कविताओं में प्रयोग शीलता देखी जा सकती है।

प्रमुख काव्य संग्रह

मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीलें, जो बँध नहीं सका, भीतरी नदी की यात्रा, छाया मत छूना मन, साक्षी रहे वर्तमान, पृथ्वीकल्प, मैं वक्त के हूँ सामने, मुझे और अभी कहना है, जन्म कैद, जो बंध नहीं सका।

भारत भूषण अग्रवाल

भारतभूषण अग्रवाल छायावादोत्तर हिन्दी कविता के प्रमुख कवि हैं।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

छवि के बंधन, जागते रहो, ओ अप्रस्तुत मन, अनुपस्थित लोग, मुक्तिमार्ग, एक उठा हुआ हाथ, उतना वह सूरज है, अहिंसा, चलते-चलते, परिणति, प्रश्न चिह्न, फूटा प्रभात, भारतत्व, मिलन, विदा बेला, विदेह, समाधि लेख।

नेमिचन्द्र जैन

नेमिचन्द्र जैन हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, समालोचक, नाट्य समीक्षक, पत्रकार, अनुवादक व शिक्षक थे।

प्रमुख काव्य संग्रह

(1) अचानक हम फिर (2) एकान्त

भवानी प्रसाद मिश्र

भवानी प्रसाद मिश्र उन गिने-चुनें कवियों में थे, जो कविता को ही अपना धर्म मानते थे और आम जनों की बात उनकी भाषा में ही रखते थे। मिश्र जी गूढ़ बातों को भी बहुत ही आसानी और सरलता के साथ अपनी कविताओं में रखते थे। इनकी कविताएँ परिवर्तन और सुधार की अभिव्यक्ति हैं।

प्रमुख काव्य संग्रह

(i) गीत फरोश (1953)

(ii) चकित है दु:ख (1968)

(iii) अँधेरी कविताएँ (1968)

(iv) गाँधी पंचशती (1969)

(v) बुनी हुई रस्सी (1971)

(vi) खूशबू के शिलालेख (1973)

(vii) व्यक्तिगत (1973)

(viii) अन्तर्गत (1979)

(ix) अनाम तुम आते हो (1979)

(x) परिवर्तन जिये (1976)

(xi) इद्म न मम् (1977)

(xii) त्रिकाल संध्या (1978)

(xiii) शरीर कविता फसलें और फूल (1980)

(xiv) मानसरोवर दिन (1981)

(xv) सम्प्रति (1982)

(xvi) नीली रेखा तक (1984)

(xvii) तूस की आग (1985)

(xviii) कालजयी (1980) खण्डकाव्य

(xix) सन्नाटा।

भवानीप्रसाद मिश्र को 'सहजता का कवि' कहा जाता है।

भवानीप्रसाद मिश्र की चर्चित कविताएँ निम्न हैं-

कमल के फूल, सतपुड़ा के जंगल, वाणी की दीनता, टूटने का सुख, गीत फरोश।

'स्नेह पथ' कविता में मिश्र जी गाँधी जी के प्रेम और स्नेह को घर-घर पहुँचाना चाहते हैं। इसका मूलभाव है- विश्व भौतिक स्पर्द्धा और हिंसा के कारण झुलस रहा है, गाँधी दर्शन ही मानवता के असर को हरा-भरा कर सकता है।

शकुन्त माथुर : शकुन्त माथुर नई कविता की प्रथम कवयित्री हैं।

प्रमुख कृतियाँ

चाँदनी चूनर (1961), अभी और कुछ (1966), लहर नहीं टूटेगी (1990), दोपहरी, सुनसान पड़ी।

हरिनारायण व्यास : मृग और तृष्णा, त्रिकोण पर सूर्योदय, बरगद के चिकने पत्ते, एक नशीला चाँद, उठे बादल झुके बादल मुख्य रचनाएँ

शमशेर बहादुर सिंह

शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक हिन्दी कविता की प्रगतिशील त्रयी के एक स्तम्भ हैं। हिन्दी कविता में अनूठे मांसल एंन्द्रीय बिम्बों के रचयिता शमशेर आजीवन प्रगतिवादी विचारधारा से जुड़े रहे। शमशेर के राग-विराग गहरे और

स्थाई थे। अवसरवादी ढंग से विचारों को अपनाना - छोड़ना उनका काम नहीं था। शमशेर उन कवियों में थे, जिनके लिए मार्क्सवाद की क्रान्तिकारी आस्था और भारत की सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्परा में विरोध नही था।

शमशेर सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में साम्प्रदायिकता के विरोधी और समाहारता के समर्थक थे। उन्होंने स्वयं को 'हिन्दी और उर्दू का दोआब' कहा है। रूढ़िवाद जातिवाद का उपहास करते हैं।

प्रमुख काव्य संग्रह

कुछ कविताएँ (1956), कुछ और कविताएँ (1961) चुका भी नहीं हूँ मैं (1975), इतने पास अपने (1980) उदिता-अभिव्यक्ति का संघर्ष (1980), बात बोलेगी (1981) काल तुझसे होड़ है मेरी (1988), कही बहुत दूर से सुन रहा हूँ (1995), सुकून की तलाश (1998) शमशेर बहादुर सिंह की रचनाओं में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तीनों की समान रूप से स्वीकृति हैं।

प्रगतिशील चेतना के कवि शमशेर बहादुर सिंह ने फ्रांसीसी प्रतीकवादी कवियों के प्रभाव में पर्याप्त प्रयोग किए। अत: उन्हें कवियों का कवि' कहा जाता हैं।

नरेश मेहता

नरेश मेहता उन शीर्षस्थ लेखकों में हैं, जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं। नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नई व्यंजना के साथ नया आयाम दिया। रागात्मकता, संवेदना और उदात्तता उनकी सर्जना के मूल तत्व हैं, जो उन्हें प्रकृति और समूची सृष्टि के प्रति पर्युत्सुक बनाते हैं।
नरेश मेहता की भाषा संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली है। शिल्प और अभिव्यंजना के स्तर पर उसमें ताजगी और नयापन है।

प्रमुख रचनाएँ

काव्य संग्रह- वन पाखी सुनो, बोलने दो चीड़ को, मेरा समर्पित एकान्त, चैत्या, उत्सवा।

प्रबन्ध काव्य- संशय की एक रात, महाप्रस्थान, प्रवाद पर्व, शबरी 'समय देवता' शीर्षक कविता इनकी एक लम्बी कविता है, जिसमें धरती के विभिन्न भागों की सांस्कृतिक राजनीतिक स्थिति का सीनिरियों प्रस्तुत किया गया है।

रघुवीर सहाय

रघुवीर सहाय की कविता अपने समय, समाज, राजनीति तथा परिवेश के तनाव की निश्छल अभिव्यक्ति है। उनकी कविता न तो अनुकरण और न किसी

लीक पर चली है। उन्होंने आज की कविता के दौर में एकदम नया मार्मिक निस्संग और निर्वैयक्तिक काव्य-मुहावरा दिया, जिससे नवीन सृजन सम्भावनाओं को नया अर्थ मिला है। इनकी समूची काव्य-यात्रा का केन्द्रीय लक्ष्य ऐसी जनतान्त्रिक व्यवस्था की निर्मिति हैं, जिसमें शोषण, अन्याय, हत्या, आत्महत्या, विषमता, दासता, राजनीतिक सम्प्रभुता जाति-धर्म में बँटे समाज के लिए कोई जगह न हो।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

सीढ़ियों पर धूप में (1960), आत्महत्या के विरुद्ध (1967), हँसो हँसो जल्दी हँसो (1975), लोग भूल गए हैं (1982), कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ (1989), एक समय था।

कुंवर नारायण

कुँवर नारायण को अपनी रचनाशीलता में इतिहास और मिथक के जरिए वर्तमान को देखने के लिए जाना जाता है। इनकी मूल विधा कविता है पर इसके अलावा उन्होंने कहानी, लेख व समीक्षाओं के साथ-साथ सिनेमा, रंगमंच एवं अन्य कलाओं पर भी बखूबी लेखनी चलाई है।

काव्य कृतियाँ

चक्रव्यूह (1956), परिवेश: हम तुम (1961), अपने सामने (1979), कोई दूसरा नहीं (1993), इन दिनों (2002), प्रबन्ध काव्य-आत्मजयी (1965), वाजश्रवा के बहाने (2008)

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना नई हिन्दी के कवि एवं साहित्यकार थे।

काव्य कृतियाँ

काठ की घंटियाँ - 1959, बाँस का पुल - 1963, एक सूनी नाव - 1966, गर्म हवाएँ – 1966, कुआनों नदी - 1976, खूंटियों पर टंगे लोग - 1973, जंगल का दर्द - 1982, क्या कह कर पुकारू कोई मेरे साथ चले, मेघ आए, काला कोयल

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की चर्चित कविताएँ - कॉफी हाउस में एक मेलोड्रामा, अहं से मेरे बड़ी हो तुम, विगत प्यार, लिपटा रजाई में, मैने कब कहा।

केदार नाथ सिंह

केदारनाथ सिंह हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि व साहित्यकार थे। वे अज्ञेय द्वारा सम्पादित तीसरा सप्तक के भी कवि रहे।

कविता संग्रह

अभी बिल्कुल अभी (1960), जमीन पक रही है। (1980), यहाँ से. देखो (1983), बाघ (1996), अकाल में सारस (1988), उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ (1995) तालस्ताय और साइकिल (2005), सृष्टि पर पहरा (2014)

सुदामा पाण्डेय धूमिल

सुदामा पाण्डेय धूमिल हिन्दी की समकालीन कविता के दौर के मील के पत्थर सरीखे कवियों में एक है। उनकी कविताओं मे आजादी के सपनों के मोहभंग की पीड़ा और आक्रोश की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है।

वर्ष 1960 के बाद की हिन्दी कविता में जिस मोहभंग की शुरुआत हुई थी, धूमिल उसकी अभिव्यक्ति करने वाले अत्यन्त प्रभावशाली कवि हैं। उनकी कविता में परम्परा, सभ्यता, सुरूचि, शालीनता और भद्रता का विरोध है, क्योंकि इन सबकी आड़ में जो हृदय पलता है, उसे धूमिल पहचानते हैं।

रचनाएँ : संसद से सड़क तक (1972), कल सुनना मुझे (1976), सुदामा पाण्डे का प्रजातन्त्र (1984)।

लोकप्रिय कविताएँ : मोचीराम, बीस साल बाद, रोटी और संसद, लोहे का स्वाद' पटकथा आदि।

चन्द्रकान्त देवताले (1936)

देवताले जी की कविता में समय और सन्दर्भ के साथ ताल्लुकात रखने वाली सभी सामाजिक सांस्कृतिक, राजनैतिक प्रवृतियाँ समाई हुई हैं। इनकी कविता में समय के सरोकर हैं, समाज के सरोकर हैं, आधुनिकता के आगामी वर्षों की सभी सर्जनात्मक प्रवृतियाँ हैं।

प्रमुख काव्य रचनाएँ : हड्डियों में छिपा ज्वर (1973), दीवारों पर खून से (1975), लकड़बग्घा हँस रहा है (1980), रोशनी के मैदान की तरफ (1982), भूखण्ड तप रहा है (1982), आग हर चीज में बताई गई थी (1987), पत्थर की बेंच (1996), इतनी पत्थर रोशनी (2002), बदला बेहद महँगा सौदा

(1995), उजाड़ में संग्रहालय (2003), जहाँ थोड़ा-सा सूर्योदय होगा (2008), पत्थर फेंक रहा हूँ (2010)

लीलाधर जगूड़ी (1944): उत्तराखण्ड मे जन्में/जगूड़ी को इनकी कृति आकाश में चाँद के लिए 1997 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था।

कविता संग्रह

(i) शंखमुखी शिखरों पर

(ii) नाटक जारी है

(iii). इस यात्रा में

(iv) रात अब भी मौजूद है।

(v) बची हुई पृथ्वी

(vi) घबराए हुए शब्द

(vii) भय भी शक्ति देता है

(viii) अनुभव के आकाश में चाँद

(ix) महाकाव्य के बिना

(x) ईश्वर की अध्यक्षता में,

(xi) खबर का मुँह विज्ञापन से ढँका

अशोक वाजपेयी (1941) : यह भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्वाधिकारी भी हैं। वर्ष 1994 में इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं-

(i) शहर अब भी सम्भावना है (1966)

(ii) एक पतंग अनन्त में (1984)

(iii) इतने से (1986)

(iv) तत्पुरुष (1989)

(v) कहीं नहीं वहीं (1991)

(vi) बहुरि अकेला (1992)

(vii) थोड़ी-सी जगह (1994)

(viii) घास में दुबका आकाश (1994)

(ix) आविन्यों (1995)

(x) जो नहीं हैं (1996)

(xi) अभी कुछ और (1998)

(xii) समय के पास समय

(xiii) कहीं कोई दरवाजा

(xiv) दुःख चिट्ठीरसा है

(xv) पुनर्वसु

(xvi) विवक्षा

(xvii) कुछ रफू कुछ थिगड़े

(xviii) इस नक्षत्रहीन समयमें

(xix) कम से कम

(xx) हार-जीत

मलयजल : जख्म पर धूल।

कैलाश वाजपेयी : संक्रान्त, देहान्त से हटकर, तीसरा अन्धेरा, महास्वप्न का मध्यान्तर, हवा में हस्ताक्षर।

मंगलेश डबराल (1948-2020)

मंगलेश डबराल हिन्दी कवियों में सबसे चर्चित नाम हैं। इनकी कविताओं में सामन्ती बोध एवं पूँजीवादी छल-गद्य दोनों का प्रतिकार है। वे यह प्रतिकार किसी शोर-शराबे के साथ नहीं अपितु प्रतिपक्ष में एक सुन्दर स्वप्न रचकर करते हैं। उनका सौन्दर्यबोध सूक्ष्म है और भाषा पारदर्शी।

प्रमुख काव्य संग्रह

(i) पहाड़ पर लालटेन

(ii) घर का रास्ता

(iii) हम जो देखते हैं

(iv) आवाज भी एक जगह हैं

(v) मुझे दिखा एक मनुष्य

मदन कश्यप (1954) : गूलर के फूल नहीं खिलते (1990), लेकिन उदास है पृथ्वी (1993), नीम रोशनी में (2000), कुरूज (2006)।

अरुण कमल (1954): अरुण कमल आधुनिक हिन्दी साहित्य में समकालीन दौर के प्रगतिशील विचारधारा सम्पन्न, अकाव्यात्मक शैली के ख्यात कवि हैं।

प्रमुख काव्य संग्रह

(i) अपनी केवल धार (1980)

(ii) सबूत (1989)

(iii) नए इलाके में (1996)

(iv) पुतली में संसार (2004)

(v) मैं वो शंख महाशंख